

कबीर के दोहे-२

जो तोकू कांटा बुवे, ताहबोय तू फूल  
तोकू फूल के फूल है, बाकू है तरशूल

दुर्लभ मानुष जन्म है, देह न बारम्बार  
तरुवर ज्यों पत्ती झड़े, बहरनि लागे डार

आय है सो जाएँगे, राजा रंक फकीर  
एक सहिसन चढ़ि चले, एक बँधे जात जंजीर

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब  
पल मे प्रलय होएगी, बहुरिकरेगा कब

माँगन मरण समान है, मति माँगो कोई भीख  
माँगन से तो मरना भला, यह सतगुरु की सीख

जहाँ आपा तहाँ आपदां, जहाँ संशय तहाँ रोग  
कह कबीर यह क्यों मटि, चारों धीरज रोग

माया छाया एक सी, बरिला जाने कोय  
भगता के पीछे लगे, सम्मुख भागे सोय

आया था कसि काम को, तु सोया चादर तान  
सुरत सम्भाल ए गाफलि, अपना आप पहचान

क्या भरोसा देह का, बनिस जात छनि मांह  
साँस-साँस सुमरिन करो और यतन कुछ नांह

गारी ही सों ऊपजे, कलह कष्ट और मीच  
हारि चले सो साधु है, लागि चले सो नीच

दुर्बल को न सताइए, जाक भोटी हाय  
बनिा जीव की हाय से, लोहा भस्म हो जाय

दान दएि धन ना घटे, नदी न घटे नीर  
अपनी आँखो देख लो, यों क्या कहे कबीर

दस दवारे का पजिरा, तामे पंछी का कौन  
रहे को अचरज है, गए अचम्भा कौन

ऐसी वाणी बोलेए, मन का आपा खोय  
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय

हीरा वहाँ न खोलयि, जहाँ कुंजडो की हाट  
बांधो चुप की पोटरी, लागहु अपनी बाट

कूटलि वचन सबसे बुरा, जारकिर तन हार  
साधु वचन जल रुप, बरसे अमृत धार

जग मे बैरी कोई नहीं, जो मन शीतल होय  
यह आपा तो झाल दे, दया करे सब कोय

मैं रोऊँ जब जगत को, मोको रोवे न होय  
मोको रोबे सोचना, जो शब्द बोय की होय

सोवा साधु जगाइए, करे नाम का जाप  
यह तीनों सोते भले, साकति, सहिँ और साँप

अवगुन कहूँ शराब का, आपा अहमक साथ  
मानुष से पशुआ करे दाय, गाँठ से खात

बाजीगर का बांदरा, ऐसा जीव मन के साथ  
नाना नाच दिखाय कर, राखे अपने साथ

अटकी भाल शरीर में तीर रहा है टूट  
चुम्बक बना नकिले नहीं कोटपिटन को फ्रूट

कबीरा जपना काठ की, क्या दिखलावे मोय  
हृदय नाम न जपेगा, यह जपनी क्या होय

पतिवृता मैली, काली कुचल कुरूप  
पतिवृता के रुप पर, वारो कोटसिरुप

बैध मुआ रोगी मुआ, मुआ सकल संसार  
एक कबीरा ना मुआ, जेहिके राम अधार